कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

शबनम अशाई और उनकी नज़्मिया शायरी से मेरी शनासाई आज की नहीं देरीना है । शबनम ना सिर्फ मेरी मदाह रही हैं बल्कि तस्तीर के दौर-ए-अव्वल में शाए भी होती रही हैं। शबनम आशाई इख़्तिसार पसंद हैं, जिन का हर नज़्मिया एक रंगीन कप्सूल की तरह है जिसमें रोगिले जिस्म से दुखी आत्मा तक के लिए त्रियाक़ भरा हुआ है, जो खुद में ज़हर भी है और ज़हर का उलाज भी। शायरी अलामतों, इस्तीआरों, पैकरों, पेराडोक्स, नास्टिल्जा तज्सीम और दीगर कई ऐसे बेनाम अनासर का इम्तज़ाज होती है जिन्हीं बाश्ज ओक़ात सिक्का बंद नकादों की नज़र गिरफ्त में नहीं ले सकती। शबनम की शायरी में पेराडोक्स को ख़ुसूसी अहमियत हासिल है।

शबनम की शायरी की दीगर ख़ुसूसिय्यात में मज़ाहिर, आवामिल और कि़फ़ियात को सादगी और बे-साख़्तगी से मुजसम कर देना और जज़्बू की सलगती हुई एक ऐसी तपिश है जिस में धुवां कम और आंच ज़ियादा है, कश्मीर की कांगड़ी जैसी आंच जिस में नरमाई भी है और गर्माई भी।

नसीर अहमद नासिर

(रावलपिंडी, पाकिस्तान)

इश्क़ तन्हाई

इश्क़ तन्हाई

कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

इश्क़ तन्हाई

कवयित्री

शबनम अशाई

अनुवादक

उमर फ़रहत

प्रथम संस्करण : २०२४

ISBN 978-81-971200-8-4

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०९९९०२३६८१६, ०८५२७ ४६०२५२

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ५००.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

समर्पण

युवा पीढ़ी के नाम

मेरे पास
एक अनकही नज़्म है
जो मुझे
सफ़र पे ले जाती है

ज़िंदगी
जिस पे तुम मरते हो
मुझे क्यों नहीं दिखती

♣♣♣

मैं जीना नहीं जानती
क्योंकि
मुझे कुछ नहीं आता

♣♣♣

तुम्हारी याद का चेहरा
जिस्म से छुप कर
मेरे मन में
कई रोज़ से रो रहा है

♣♣♣

मुझे मिटाने के
तुम्हारे जतन
रायगां जाएँ कहीं
मैं अपनी आवाज़ दान में दे कर
खामोशी पहन रही हूँ

♣♣♣

मुड़ मुड़ के देख रहे चेहरे को
आँखों से थाम रही हूँ
पर वो दर्द
किसकी आँख
तुम्हारे सीने पे लग गई थी
भटक रहा है
गलियों में
धूप में झुलसती गलियों में !
क्यों बिगाड़ दी
तुमने
आदत
दर्द की ?

ये जो तुम अपनी अना को
झिड़की का लिबास पहनाती हो
रिश्तों को
सैलाब में बाढ़ बहा रही हो
मैं बहा सकती हूं ....
अपनी नफ़ी में !
तुम्हारी अना , बे–लिबास
ज़िंदगी की
किस गली से गुजरेगी
साहिल तुम्हारे क़दमों तले
कब तक रहेगी
.... सैलाब
साहिल का लिबास
दलदल से बुनते हैं

♣♣♣

सिलसिला नाइंसाफ़ियों का
ज़रा भी थमता
मैं तुम्हारी कायनात में
झांक लेती
मेरे मौला
तुम्हारे बंदों ने
मेरे आंसू
सूखने
न दिए कभी

तुम जिस से लबरेज़ हो
चेहरा उस का देखा है
बहुत तारिक़ ज़हरीला !
मेरे चेहरे का तिल
तिल नहीं
नील है उसी ज़हर का
न छलक अब ....
मेरे शहद भरे दिल को
अपनी तारिक़ी में
.... न लें अब

♣♣♣

जिस के क़दमों में
खुद को रखा था
कि किसी लम्हे
मुझे समझेगा
एक ख़्वाब था
जो मेरी आंखों में
रुका पड़ा है ......
आओ कि अब दफ़ना दें
उस ख़्वाब को
उन्हीं पैरों तले

♣♣♣

मन में आते मोहब्बत से
तो मुझ में बस जाते
बदन में मेरे
तुम आए नहीं !
बदन मेरा
मेरे मन के
आहाते में है
तुम कम पड़ गए
आहाते में

♣♣♣

तुम कहां हो
नज़्म मुझे कब तलक लिए चलेगी?
बेबसी अकेलापन रूठ
खुशी उदासी गुस्से
क़िसे हादसे
जो मुझ पे गुज़रे
नज़्म पे लादे
साँस फूल रही है
नज़्म की
तुम कहां हो
नज़्म मुझे कब तलक लिए चलेगी ?

♣♣♣

इंतिशार क्यों बोते हो
वक़्त का साया ढलते ही
नई धूप आएगी
नई कोंपलें खिलेंगी ....
इंतिशार से उगी टहनियां
नफ़रत के फूलों से लद जायेंगी
फूल अपनी खुशबू से कट जायेंगे
ज़मीन अपना सीना चाक करेगी
और खदेड़ देगी अपनी खेत से
तुम्हारा मेंढ़ ....

ताबूत उठता क्यों नहीं
कहीं कोई जड़
बिना उखड़ी तो नहीं
जो हो भी तो
महसूस क्यों नहीं करती
के ज़मीन मुझे
माजूल कर चुकी है!

♣♣♣

पागल पानी
कहां बहा लिए जा रहे हो
कहीं तो किनारे लगाओ
कफ़न मेरा
तार–तार हो रहा है
पागल पानी
कहीं मेरी लहद भी
बहा न लेना !

♣♣♣

ज़रा अपने
बेस्वाद जज़्बों को
रहने दो
हटा दो
खुदग़र्ज़ी की तिश्तरी
मेरी नज़रों से
मैं नज़्म चख के
आई हूँ

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

दिलासे के पानियों से
दाग़ धुलते नहीं
हौसले के ग़ाज़े से
निशान छुपते नहीं
पानी सा बह जा
दाग़ के हिसार से गुज़र जा
जो नहीं गुज़रोगे
तो जमूद में
खुद
दाग़ बन जाओगे

♣♣♣

मैं ज़िंदगी का ज़ख़्म हूँ
जब भी कुरेदो
नज़्म जितनी हूँ !

♣♣♣

ऐ काग़ज़
यूँ बेहिस सा
गूँगी आँख से
मुझे न देख
तुम्हारे सुनसान जिस्म में
लफ़्ज़ के घूंघरू
धमकने वाले हैं
क़लम के पैर भारी हैं......

♣♣♣

जब मैं छोटी थी
माँ की गोद में थी
उस के रेशमी बोलो से
मैं अक्सर फिसलती थी
और रोती थी.............
अब मैं बड़ी हूँ
ज़िंदगी की गोद में हूँ
उस के चिकने लम्स से
मैं अक्सर फिसलती हूँ
और रोती हूँ...........

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

अंधेरा और मैं

न कोई राह
न मंज़िल
न डगर
न ख़्वाब
न दस्तक
न इंतज़ार
न लफ़्ज़
न धुन
न कोई साज़
न आवाज़
मगर खुदावंदा
तुम ?

♣♣♣

आँसू बहा दूं
के नज़्म लिखूँ ?
आँसुओं ख़ंका लेंगे
मन को !
नज़्म बहलाएगी
दिल को !
धुल जाऊं
कि बहल जाऊं ?
...नहीं तो निराशा
मेरे पैरों में
पाज़ेब तोड़ कर
फिर कोई सफ़र
बांध देगी

♣♣♣

उम्मीद की आँखें
ताल्लुक की
राह तक रही हैं
तुम कहाँ छोड़ आए हो
ताल्लुक ?
मैं लाताल्लुकी के फलक से
बग़ैर आहट
उतर जाऊँगी ......

उदास की गर्द में
जिंदगी की नसें
जम रही हैं
तुम्हारे जन्मे तज़ाद में
अपनाइयतें रो रही हैं
सर पीट रही हैं मोहब्बतें !
तू किस बात पर रंजीदा है ?
मुझे ताज़ा रफ़ाक़तों को
बचाना है !
ज़िंदगी को साँस लेना है.......
या बारी
कोई राख
रहमतों की गिरा दे
तज़ाद से फैली आग
बुझा दे !

♣♣♣

मंज़िलों की तलाश में
जितनी भी मिट्टी कुरेदी थी
उस से अपने मन के
खालीपन को भरना था
तुम उस में
कौन से फूल तलाश करने लगे
उस मिट्टी से
मेरी खोई हुई मोहब्बतों की
खुशबू आती है
जो सिर्फ़
मेरे मन को मोअत्तर करती है
फूल कहीं उगे ही नहीं
मोहब्बत का खेत अभी
बारबर हुआ ही नहीं ....

♣♣♣

कैसी बेचैनियाँ
तुम्हें पहन रही है
कौन सा इज़्तिराब
तुम्हें ओढ़ रहा है
ये बेचैनियाँ ये इज़्तिराब
यूं धंधनाते हैं
जैसे ना तन
ना कोई मन तेरा
ना ताना
ना कोई बाना तेरा
ऐसे में
इश्क़ को कहाँ ठहराओगी ?
ना कोई हरीम–ए– दिल
ना सरा–ए–जां कहीं ....

दर्द की आँख से टपका हुआ
मैं वो आंसू हूँ
जो
ज़िंदगी के चेहरे से उतर कर
शहरग पर रुका
ठंडा पड़ रहा है !
ज़रा अपने गर्म होंठ
मेरी हल्क पर रख दो
अपनी जुब्बाँ से
मेरा नमक चूस लो
मुझे पानी कर दो ....

♣♣♣

यह कैसा दर्द है
कि चोट नहीं भूलता
ज़ख़्म भर चुका है
जहां से रिस्ता था
वहां अब दाग़ है
दाग़ ज़ख़्म की याद में
मुझे अक्सर
उतार देता है

♣♣♣

तुम पास थे
मैं अपने साथ रह रही थी
तुम चले गए
तो हर पल
तुम्हारे साथ गुज़रने लगा
इस बात की गवाह
वो सोंधी महक है
जो वफ़ा के आंसुओं से
मन के भीग जाने पर
फैलती है
हर शाम........

♣♣♣

आंसू नहीं
नज़्म है
नज़्म भी नहीं
शायद तुम हो
तुम से
चश्म मेरी तर है
क़ब्र की मिट्टी सूख रही है.......

♣♣♣

उस का लहजा
मुझे तन्हा कर देता है
और मोहब्बतों को ठंडा......
यख बस्ता मोहब्बतों पे
मन के पैर टिकते नहीं
फिसलते हैं......
ठिठुरती तन्हाई
मुझे आतिशदान में
फेंक देती है
मन राख उड़ा लेता है
और लहजा
चिन्गारी !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

मोहब्बत वो नहीं
जो बदन के तार पे बुझती है
मोहब्बत वो है
जो तुम्हारी
नामौजूदगी में
मेरे मन में
बोलती है.......

उस का मन
तुम्हारी बशारत से
ज़्यादा देख सकता.....
जो वह अपने न होने को काफ़ी न समझती
तुम उस को अपने मुक़ाबल खड़ा देख सकते !
जो वह किसी पुरअसरार हिसार में न होती
तुम उस को सुनहरे पानियों में
तैरता देख सकते !
.... लुटने का लुत्फ़ हो
या हो लुत्फ़–ए– बरबादी
उस की डुबकी
तुम्हारे मन की सकत से बाहर है .....

♣♣♣

बस तुम्हारे काम के
मेरे हाथ और पैर हैं
रहने दो
सर का क्या करोगे
दिल का क्या करोगे ?

♣♣♣

बेटी नहीं
फख्र थी उस की मैं
दास्तान–ए–हयात का
हीरो था वह
दर्शाता था वह मुझे .....
मरा तो शामिल हुए सब
फख्र उस का तोड़ने वाले
मोहब्बतें मिसमार करने वाले ...
जश्न की धुन में थे सब रक़्सां
कि मेरा लाशा चीख पड़ा
ऐ मेरे फख्र!
अपने ख़ातिमे का एहतमाम कर
तुम्हें दर्शाने वाला नहीं रहा !

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

पापा
दरवाज़ा खोल दो
अपनी लहद का
मुझे अंदर आने दो
तुम्हारी जागीरों में
मेरी क़ब्र कहीं नहीं है ...

♣♣♣

नज़्म खड़ी हुई तो थी
जमात नहीं हुई
अज़ान
सभी मस्जिदों में
इक्कठे ही
शुरू हुई
किसी मुएज़्ज़िन की
समझ नहीं आई

♣♣♣

ज़िन्दगी को नूर बख़्शने वाले
नमनाक़ इश्क़ चेहरों का
जनाज़ा निकल चुका है
तदफ़ीन की भीड़ से
एक बीमार ज़िंदगी
नागहाँ उग आई है
जिस की सांस
कोरोना
अपनी अंगुलियों पे गिन रही है
और वह
एक अनदेखे गुबार में
गुम हो रही है !

♣♣♣

वक़्त
कोरोना में ढोनी मारे बैठा है
2020 की धड़कन बढ़ रही है
उम्र के बढ़ते क़दम घट रहे हैं

♣♣♣

ये जो मुझ में सरसराते हो
ख़नक सी बन कर मुझ में
गूँजते हो
कैसे मानूँ
तुम नहीं हो ....

♣♣♣

अब कहाँ तकता है कोई
राह मेरी ऐसे
जैसे रात
आँखों में इंतज़ार
और लबों पे प्यार लिए
तुम खड़े थे
वो ....
ख़्वाब क्यों था ?

♣♣♣

पहुँच गई फिर क़ब्रिस्तान
.... बाहर सेलाब
.... अंदर सेलाब
बाहर का सेलाब
थम रहा है
पर लहद में अपनी
आओगी कैसे
सेलाबों से फूल गई हो
अंदर का सेलाब भूल गई हो

♣♣♣

मेरे नहीं
मजबूरी के ये आंसू हैं
खुदा के मंशा पे चलने की मजबूरी के ....
आसमानी फ़ैसलों को जीने की मजबूरी के ....
मोहब्बतों की जन्मी तन्हाई के
ये आंसू हैं
मेरे नहीं
मैं रोती नहीं
मजबूरी रोती है मुझे !

♣♣♣

किसी ज़मीन ने जज़्ब नहीं किया
भटकते रहे सहरा सहरा
सहरा से सहरा तक की मसाफ़तें
मुझ में कदम रखते ही
तराशती है अपनी अपनी ख़ानक़ाह
असबात ओ नफ़ी के दरमियान
हर ख़ानक़ाह के
सातौं तवाफ़ करती हूँ
और भस्म हो जाती हूँ
दायरों में ....
मिट्टी में मिट्टी के जज़्ब होने का ख़याल
सर पटकता है !

लफ़्ज़ों का फ़ाहा
मन के छालों पे रखने से
नज़्म का दर्द थमता नहीं ....
कुछ तो पस–ए–अल्फ़ाज़ है
जो नज़्म में
रिस्ता नहीं

किसी नाकरदा जुर्म की पादाश में
ज़िंदगी से सबकदोश हो गई हूँ
सहम के खुद में बैठी हुई हूँ
कायनात
मेरी चौकड़ी में समट गई है
ज़िंदगी की हर शय अपनी आंखें
मुझ पे मरकूज़ किए हुए हैं
मैं मर चकी हूँ कि आया ज़िंदा हूँ
उन की नज़रें
तय नहीं कर पातीं ....

लबों पे लफ़्ज़ जम रहे हैं
मानी मन में थम रहे हैं
लफ़्ज़ ओ मानी के ताबीदन में
संतूर की तान टूट रही है
ज़िंदगी
गलियों गलियों फिरती है
बेसुरे संतूर पे
गूँगे गीत गातें हैं

♣♣♣

तुम मोहब्बत से मेरा मन गूंधते
में रौशनाई से
अपनी तन्हाई नहीं गूंधती !
तन्हाई गूंधते गूंधते
मैं रोटी पकाना
भूल गई हूँ
क्या औरत ऐसी होती है !
हैरत के दुख को
कैसे सहलाऊँ !
मन के तसमे कस्ती हूँ
सफ़र मेरा ख़्वाब नहीं
घर के दरवाज़े पर
अना का ताला है

♣♣♣

अलफ़ाज़ का पेराहन
तार तार हुआ है
ज़बान को ज़िंदान में
डाल दिया गया है !
नौज़ायदा लफ़्ज़
बांझ मन के
थन चूस रहे हैं
तन का जमाल
रेशम ओ कमख़्वाब में
पनाह लिए हुए है
मानी
ज़ेब तन क्या कर लें ?
पाया तख़्त के फरमान का
इंतज़ार है ....

दूसरों की आंख से देखते देखते
तुम्हारे यकीन की हद खो गई है
यकीन का मिज़ाज
वुलर जैसा साधा है
यह आंखों का ऐतबार कर लेता है !
कभी अपनी आंखों से ख्वाब देखते
उन के टूट जाने पे
कर्चियाँ जोड़ते
तो तुम यकीन
ख्वाबों से बुनते ......
ज़रा अपनी आंखों से देखो
दूसरों की आंख से नहीं !

♣♣♣

ख्वाब
आंख की गोद से
उत्तरा नहीं
रस्ता क्या दिखता
भटक रही हूँ
भटकन की कोई छत नहीं
खुला आसमान
और ढेर सारी फिसलन
पाँव तो टिकता नहीं
फिसलन
पापोश को बांहों में लेती है
आंख ख्वाब को गोद में लिए है
मैं ख्वाब सहलाऊँ
कि तस्में बांधूं ?

♣♣♣

बर्फबारी
जैसे धरती पर नहीं
मेरे मन में हो रही हो ....
क्या तुम ने बर्फ को
किसी मन में जमते देखा है?
जमी हुई बर्फ पर
खिलाड़ी
फिसलन खेलते हैं !

♣♣♣

शायरा नहीं
तलाश हूँ
कोई तलाश ....
एक इज़्तिराब
तैरता है जो लहू में मेरे
पल पल ....
बोलता है जो मन में मेरे
पल पल ....
........कि कोई खलिश
जो भर देती है तलाश को
जैसे भर देती है बाँसुरी को
मिठास
सांस की ......

ज़िंदगी
रूह को रूहानियत
और वजूद को
वजूदियत बख्शने वाली
आदाएँ
जब से तुम ने खो दी हैं
मैं लुगत में छुप रही हूँ !

♣♣♣

रात समंदर ख़ामोश था
उजाले ने कितना शोर जन्मा
नज़्म कैसे होगी अब ?
तन्नूर जैसे तपते दिन में
खुद को भुनना होगा अब
हयात की जुस्तजू में
जीवन जीना होगा अब
धुध खामोशी की
छाएगी फिर कब ?
नज़्म कैसे होगी अब !

♣♣♣

काला सूरज
फिर तुलू हो रहा है
फिर ठोकर खाऊंगी
चकना चूर हो जाऊंगी !
मौत अपनी फाँसी
अगर मेरे गले में डालती
मेरी खैर थी ....

♣♣♣

खर्च लो
आज मुझे पूरा खर्च लो
ज़िन्दगी के सूंसमज की सलाई
टूट रही है

♣♣♣

मेरा हासिल
जो तुम्हारी ज़द में
राख हो गया
मेरा लिबास है
लाहसिली के लिबास में
लम्हा भर
खुद को सोचो
तो मुझे जानो

♣♣♣

तुम्हारी तंग गली में
मेरी बेकदरी
रक़्स करती है
दर्द के घुंघरू
खनकते नहीं
रोते हैं
पर खनक दर्द की
मन की प्याली में
छलक रही है .....

♣♣♣

ये बरसती बारिश है कि
तुम्हारी रफ़ाक़त की बूदें
जो मुझ पे बरस रही हैं
चाहत का अनोखा सेक
मेरे भीगे तन को सुखा रहा है
पर भीगा मन
तुम्हारी छाँव लिए
वहीं कहीं
तुम्हारे पास पड़ा हुआ है
देखो ज़रा
तुम्हारी मसाफ़तों को
इस का अहसास
नहीं शायद

♣♣♣

ए काश धनक रंग में
एक बार वो भी रंग जाते
गुनाह उन के घुल जाते
मोहब्बतों की सैराबी में
अपनाईत में घुल जाते
महकते फूल खिल जाते
वक़्त कोहराम टल जाता .....

अपने बदन से
रूह उतार फेंकी थी
जब तुम्हारे
जिस्म के सतसंग में
आई थी ....
जिस्मों का रेवड़
गुज़र गया
तुम कहां हो ?
मेरे बदन के
अंधे हाथ
तुम्हें तलाशें
कि अपनी रूह ....

♣♣♣

रात नौयित बदल गई
उदासी की शिकस्त खुरदा खुशी ने
जब दस्तक दी ....
शश–ओ–पंज में मेरे हाथ
मन के दरवाज़े पे ठहर गए
किवाड़ खोलूँ कि नहीं
दिल पे चस्पां
"मोहब्बत मोकूफ़ है"
इश्तिहार पढ़ूं कि नहीं ....

♣♣♣

अंबार लगे हैं
अज़्ज़ीतौं की रूई के
कितनी अज़िय्यतों का सूत कातूँ
मन की तकली निढ़ाल है !
रूई के सीने में छुपी
कोई चिंगारी आग लगा दे
इस से पहले चादर बुनती हूँ
बुनकर नहीं हूँ
चादर का सायबान करती हूँ !
तुम ना खोलो
अपने थान ....

काश यूँ होता
कि वफ़ा
मन काफ़िरन चाक कर के
फ़रार पाती !
बखिए अधैड़ कर
ऊधम जोत के
मन को छोड़ जाती
...... इंतज़ार तमाम
कट जाते
मन की आंख लग जाती ......

♣♣♣

जाने
कहां दब गए हैं
इंसान की खोज में
मेरा चेहरा
पत्थर हो गया
जानवरों की
भयानक आवाज़ों में
मैंने मेरी आवाज़ खो दी है
पत्थर चेहरा
बिन आवाज़ का वजूद
कितना भयानक होगा
तुम्हें मालूम भी है ?
जो है तो
देखते क्या हो
तुम तो खुदा हो !

♣♣♣

तुम भी तो कोई ख्वाब देखो
फूल के होंठ से ओस ले लो ....
वफ़ा की ओस में भीगी ठिठुर रही हो
धूप में कुछ पल पंख तो खोलो
जीवन की ज़रा जुल्फ तो खोलो
सुलझाते सुलझाते उलझ रही हो
खुद को सालिम ख़र्च रही हो
ख्वाब सब के पिरोते–पिरोते
धागा रेशम हो गई हो
अपना कुछ तो पसंद अज़ कर लो
तुम भी तो कोई ख्वाब देखो

♣♣♣

लो
य़ह क़ब्र भी मुनहदिम कर दी
अब कहाँ पे खोलें
कुफ़्ल दर–ए–ज़ात का
और सहलाओं
आबले मन के !
कहाँ पे दफ़नाऊंगी
शजरे की तेहरीर अब
जो लौह–ए–महफ़ूज़ को
ज़ीस्त कर लों !
क्या करूं
मैं क्या करूं ?
ज़ंजीर–ए–ज़ीस्त की पकड़ में नहीं
अपनी ज़ात में मुक़फ़्फ़ल हूं ....

♣♣♣

जिसे ज़िंदगी
ख़ामोश न कर सकी
वो ICU में
चुप हो गया

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

तुम जिस धुन पे नाच रहे थे
वो रक़्क़ासा मौत निकली
मैं किस से क़दम मिलाऊँ ?

मेरा सफ़र
उस ताबूत में दफ़न है
जो तुम्हें क़ब्रिस्तान पहुंचा के आया !

♣♣♣

ज़िन्दगी
में तेरे मसरफ़ में नहीं
लुग़त में बंद
एक शब्द हूँ
ज़िंदा कैसे हो जाऊँ ?

♣♣♣

शातिर मुठियों में दब रही हूँ,
चालाकियाँ मुझे निचोड़ रही हैं
मेरा वुजूद उस मलमल सा हो रहा है,
जिस का कोई ताना और न बाना हो

♣♣♣

ऐश–ट्रे भर जाए
तो देखना
यह तुम्हारी सिगरेट से झड़ी
कोई राख नहीं
कर्ब है मेरी रूह का ....

♣♣♣

तुम्हारे बदन के हाथ
उस शहद से
कुछ भी तराश लेते हैं
जो मेरे मन के होंठों से
गिरता है ....

♣♣♣

डरना सहमना
दिल का धड़कना मोकूफ करना
मामूल बन जाए तो ?

♣♣♣

मेरे सर पे
जो छतरी है
इसमें कोई कपड़ा नहीं
बस तितलियां हैं

♣♣♣

मेरे बदन से तकती नसें
तुम्हारे लबों की छुवन संभाले
मुझ से अक्सर पूछती हैं
वो अतायें अता की
क्या मोहब्बत नहीं थी ?

♣♣♣

किधर से हवा चली
दस्तार अजदाद के उड़ा कर
सरक गई कहां से ?

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

नदी को बहना नहीं आता
अपनी ही ज़मीनों में
खो जाती है
खोई हुई नदी की बेचैनी
मुझे पहन रही है
खोए हुए बहाव़ का इज़्तिराब
मुझे ओढ़ रहा है !
हुलिया मेरा बदल रहा है
तुम कैसे खोज लोगे मुझे
इन ज़मीनों में !

♣♣♣

लाओ ज़रा लफ़्ज़ के हाथ
मेरे मन पे फेर
मन की धड़कन
कुछ तेज़ है !
उस ने अपनी आँखों से
इश्क़ देखा ....
लाओ ज़रा लफ़्ज़ के हाथ
मेरे मन पे फेर
यह इश्क़ का साया है
कि कोई
ना–गुफ़्ता खलिश ?

♣♣♣

क़लील गुनाह
थोड़ा सुकून
चंद मुस्कराहटें
थोड़ा खुलूस
कुछ बेबाकी
थोड़ा जीवन
और क्या चाहिए था
बस वो ख़्वाब
कि आँख से गिरता नहीं
उम्दा लिबास वाला ....

♣♣♣

मौसम की बात कर सकते हैं
मिज़ाजों की नहीं
मोहब्बतों के मौसम में
सोच को अपनी आँख से नहीं
मन की आँख से
देखना चाहिए
वफ़ा की कुर्बानी
सब से बड़ी कुर्बानी है

♣♣♣

शनाख़्त

घर में जो उन की होती
यूँ बाज़ारों में
न ढूँढ़ती फिरतीं
वो अपने
Name Plate ....

♣♣♣

बदन निढाल हो गया
रूह के तवाफ़ में
पहना लिबास खो दिया

♣♣♣

यह जो दलदल पे

यूं मु'अल्लक़ खड़ी हो

धंस जाओगी ....

चलोगी

तो फिसल जाओगी ......

दलदल तुम्हें

बहा भी तो नहीं सकती

कहाँ जाओगी

किधर जाओगी

कितने दिन बाकी हैं

मौसम की करवट में

दलदल के सूख जाने से पहले

जो कहीं

कोई दरार मिले

तो छुप जाना ......

किसी शब्द में
छुपा होता है बारूद
जो होंठों से निकलते ही
उड़ा देता है इमारत
इश्क़ की ....
और दब जाता है
मलबे में सब कुछ
मोहब्बत की इबारत भी !

♣♣♣

तुम्हारे कद की नहीं
न पैर से पैर
न माथे से माथा मिले
तोंद कितने कदम चलेगी ?
तोंद कौन से ख्वाब देखेगी
ख्याल पछतावा नहीं
माथे का टिका है ....
फैसला पछतावा है

♣♣♣

देख
देख ज़रा
शान–ए–आशिक़ी देख
मोहब्बतों की तलब में
लुटी हुई वो
किस शान से
रंग–ए–इश्क़ में मलबूस
कुलीदें संभाल रही हैं
मोहब्बतों की हश्र सामानियाँ
महफ़ूज़ कर रही हैं
इश्क़ की तमाम दौलत जैसे
इस बावली के
ख़ज़ाने में है!

♣♣♣

उकताहट नहीं
बेज़ारी नहीं
जो मन में गूंज रहा है
कुछ और है...
बे–ऐतमादी है
कि कोई ख़ौफ़
ना–मालूम सा...
ख़ौफ़ का तालुक़
मेरे इश्क़ सा था
वो इश्क़
जो हम भूले भी नहीं
और हर पल याद भी नहीं
जिस के साथ
रूमान वाबस्ता है
तारी है...

♣♣♣

मोहब्बत तुम्हारे दर पे
ख्वार होती है बार–बार
तुम बहन बेटी मां
सब को गाढ़ दो
मोहब्बत फिर नज़र न आएगी
कभी अपने दर पे

♣♣♣

Digitized By e Gangotri and Kashmir Treasure

ये पगडंडियाँ
बनाते–बनाते
तुम्हारे हाथ
क्या हुए होंगे
मेरे पैर
उन पे चलते–चलते
सहम रहे हैं .....

♣♣♣

तुम कहाँ मरे हो
मेरे मन के मुसल्ला पर
तुम तो सजदे में हो

♣♣♣

जिस के गिरद मेरी कायनात घूमती
वो मुझे
ज़िंदगी के पायदान पे लटका के
निकल गया ....

♣♣♣

शब भर
रात
मेरे थन चुस्ती रही
पौ फटे ही
सुबह के सीने पे
सो गई ....
मेरी बाँझ बांहें
दिन के अजाले में
तन्हाईयां सहलाती हैं

♣♣♣

लज़्ज़त–ए –काम–ओ–दहन
दरकार है तुम्हें
मेरे यहां
ग़म का दस्तरखां बिछा हुआ है
सुराहियाँ
आंसुओं से छलक रही हैं
मन में मेरे
छाले पड़े हैं वस्वसों के
राहत का जाम पीने वाले
तुम्हारा एहतिमाम
कौन करे ?

♣♣♣

ख़याल
तज्रिबा
दुख
ख़ुशी
सब आवाज़ उतारते हैं
जब
अपनों के चेहरों से
अजनबी उभरते हैं

♣♣♣

सूरज तुम यूं ही
मुझे फ़ना करने के दर पे हो
देखो अंगड़ाई ने बांहें फैलाई
पल भर मुझे ज़िंदा रहने दो
सुबह को ज़रा ठंडक लेने दो
सब्ज़ा ज़ारों को भीगने दो
पंखुड़ीयों के लब
तर होने दो
सूरज तुम यूं ही
मुझे फ़ना करने के दर पे हो
पल भर में
खुद फ़ना हो जाऊंगी
मैं
ओस हूं ------------

♣♣♣

मुझे बार बार फ़ाश न कर
महरम नहीं है तो
उन नग़्मों से
जो सोज़–ए–इश्क़ की तार पे
बजते हैं ....
महरम नहीं है तो
दश्त–ए–वफ़ा से
जिस का ज़र्रा–ज़र्रा
धुन बन जाता है
महरम नहीं है तो
मुझ से ....
वफ़ा मेरी फ़ितरत है
उल्फ़त मेरा इश्क़
हर शै की नफ़ी न कर
मुझे बार बार फ़ाश न कर

♣♣♣

शबनम अशाई की शायरी शिकस्ता ख़्वाबों
शिकस्ता आरज़ूओं की शायरी है जिसमें जि
की तल्खियों और उसकी खार शगाफियों
बयान है, जिसमें दाखिली आज़ार का इज
है। इस दिल शिकस्तगी ने शबनम अशाई
फितरत के दामन में पनाह लेने पर मजबूर
दिया है। यही वजह है कि वह अपने वजूद
तज्सीम (personification) कभी दरख़्
करती हैं तो कभी मुहाजिर परिंदों से। इस त
वह गोया अपनी तज्सीम के लिए या अ
वजूदी इज़हार के लिए नए इस्तेआरे और
अलामतें वज़ज़ करती हैं। जब इन्सानी वज
की असल अलामत और इस्तेआरे मादूम
जाएँ तो दूसरे इस्तेआरों की तलाश एक अ
फितरी बन जाती है। शबनम अशाई ने अप
वजूद की इस्तेआराती तक़लीब के जरीए य
वाजेह कर दिया है कि वजूद की जो हक़ीक
माहियत और उस की हक़ीक़ी अलामत है, उ
की गुमशुदगी या उस का इन्हिदाम ही इन्सा
को दूसरी राहें शक्लें इतख़्यार करने पर मजबू
करता है।

हक़्क़ानी अलक़ासमी
(दिल्ली, भारत)

उमर फ़रहत **शबनम अशाई**

शबनम आशाई की बेशतर नज़्मों हसी पेकरों को मुंकलिब कर के एक नया तश्बीही इलाक़ा या मानवी इंसिलाकात का मुतहर्रिक अर्सा जन्म देती हैं। लिखने का अमल जितना आसान नजर आता है उतना सहल अलहसूल होता नहीं। कागज, क़लम और लफ्ज़ की यकजाई मानूस तज़रबात और फहम आमा से माखूज़ तसव्वुरात को यकसर शिकस्त कर देती है। आँख का काम देखना है बोलना नहीं कागज जिंदगी की हरारत से महरूम होने के बावजूद कायनात को इज़हार के मुख्तलिफ रंगों से आबाद रखती है। कागज़ तो महज़ तरसील का एक बे-हिस माश्रूज़ है। कागज़ की आँख भी कुव्वत-गुयाई से आरी होती है और उस के वुजूद-ए-बर्ग ओ बार नहीं लाता। कागज़ और लफ़्ज़ का रिश्ता कार-ए-तखलीक में उन दोनों की तलव्वुस का इशारिया है। सौत ओ सदा के ला-ताश्दाद इम्कानात की आबियारी क़लम करता है। इज़हार सरिश्त इनसानी का असासी हवाला ही नहीं बल्के खुद इनसान है। संसान जिस्म और क़लम के पैर भारी होना सरासर इनसानी तम्सील है।

शाफे किदवाई
(अलीगढ़, भारत)

मूल्य 500.00 रुपये

ISBN 978-81-971200-8-4

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी -508 गली नं. 17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो.08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201102